

डीरेका राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक सम्पन्न

वाराणसी, 13 जून। डीजल रेल इंजन कारखाना महाप्रबंधक सभा कक्ष में बुधवार को डीरेका राजभाषा कार्यान्वयन समिति (डीरेकास) की तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता करती हुई श्रीमती रश्मि गोयल (महाप्रबंधक) ने अपने संबोधन में कहा कि तकनीकी क्षेत्र में राजभाषा का सराहनीय प्रयोग कर डीरेका अन्य कार्यालयों के लिए पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। यह डीरेका के लिए प्रसन्नता की बात है कि डीरेका का राजभाषा विभाग नगर के कार्यालयों में भी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रयासरत है।

डीरेका के नवीन चुनौतियों का उल्लेख करती हुई महाप्रबंधक श्रीमती गोयल ने कहा कि वर्तमान समय में डीरेका परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। हमारे संमक्ष उत्पादन की नयी चुनौतियां हैं। श्रीमती गोयल ने उपस्थित समस्त विभाग प्रमुखों एवं नोडल अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि समस्त कर्मचारियों को नये निर्देश सुस्पष्ट एवं सरल हिन्दी में दिया जाये।

उन्होंने कहा कि अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित होने वाले पत्रिका 'डीरेका दर्पण' के लिए तकनीकी लेख मौलिक रूप से हिन्दी में लिखें। इसके साथ ही कार्यालयीय कार्य में अनुवाद पर निर्भर न होकर मूल रूप से राजभाषा में ही कार्य करें। बैठक के दौरान महाप्रबंधक श्रीमती गोयल द्वारा राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित 'डीरेका

दर्पण' के नवीन अंक का विमोचन किया गया। इस अवसर पर प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर द्वारा प्रस्तुतिकरण के माध्यम से 'सौर ऊर्जा'

प्रगति के लिए किये जा रहे रचनात्मक प्रयासों से अवगत कराया। इस अवसर पर उपस्थित विभागाध्यक्षों एवं अधिकारियों द्वारा अपने-अपने



विषय पर विशेषज्ञतापूर्ण व्याख्यान दिया गया। इसके पूर्व उपस्थित अधिकारियों का स्वागत करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी ने डीरेका में हो रहे हिन्दी के प्रयोग और

विभाग से प्रस्तुत हिन्दी की प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की गयी एवं अपने विचार प्रस्तुत किये गये। बैठक का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी ने किया।

अब 160 की स्पीड से दौड़ सकेंगे विद्युत रेल इंजन, हाई स्पीड इंजन का होगा परीक्षण

वाराणसी। चित्तंजन लोकोमोटिव कार्यशाला आसनसोल ने आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले सामान्य विद्युत इंजन को 160 किमी प्रतिघंटे की गति से दौड़ने योग्य बना दिया है। विद्युत इंजन डब्ल्यूएपी-7 में तकनीकी बदलाव कर उसने डब्ल्यूएपी-7 एचएस नाम दिया है। वर्तमान में डब्ल्यूएपी-7 श्रेणी के इंजन अधिकतम 140 प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ रहे हैं। तकनीकी परिवर्तन के बाद इनकी रफ्तार 160 किमी प्रतिघंटे हो जाएगी। हाई स्पीड इंजन परीक्षण के लिए उत्तर रेलवे के गाजियाबाद शेड में भेजा गया है। वहीं डीजल रेल कारखाना (डीरेका) में भी इस तरह के इंजन को हाईस्पीड में परिवर्तित करने के लिए कुशल तकनीकी टीम और उपकरण हैं। रेलवे बोर्ड से निर्देश मिलते ही हाईस्पीड इंजन का निर्माण शुरू हो जाएगा। हालांकि इससे पहले ही डीजल रेल इंजन कारखाना प्रशासन/अपनी तैयारी शुरू करने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। इस दिशा में तकनीकी स्तर पर भी मंथन का दौर जारी है। 14 टन हल्का होगा हाईस्पीड इंजन विद्युत इंजन के डब्ल्यूएपी-7 श्रेणी के इंजन को हाईस्पीड बनाने के लिए इसका वजन 14 मीट्रिक टन तक कम किया गया। इसके अलावा गियर के अनुपात में भी आमूलचूल परिवर्तन किए गए हैं। इसके साथ इस इंजन की स्पीड की निगरानी के लिए साफ्टवेयर में भी जरूरी बदलाव किए गए हैं। डीजल रेल कारखाना में भी ऐसे इंजन बनाने की क्षमता व तकनीक मौजूद है। रेलवे बोर्ड के निर्देश पर इनका उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए डीरेका अपनी तरफ से पूरी तरह तैयार है।



जनवार्ता, वाराणसी, पृ.सं०.3

दिनांक: 14-6-19

अब 160 की स्पीड से दौड़ सकेंगे विद्युत रेल इंजन, हाई स्पीड इंजन का होगा परीक्षण

वाराणसी (जनवार्ता)। चित्तंजन लोकोमोटिव कार्यशाला आसनसोल ने आमतौर पर इस्तेमाल होने वाले सामान्य विद्युत इंजन को 160 किमी प्रतिघंटे की गति से दौड़ने योग्य बना दिया है। विद्युत इंजन डब्ल्यूएपी-7 में तकनीकी बदलाव कर उसने डब्ल्यूएपी-7 एचएस नाम दिया है। वर्तमान में डब्ल्यूएपी-7 श्रेणी के इंजन अधिकतम 140 प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ रहे हैं। तकनीकी परिवर्तन के बाद इनकी रफ्तार 160 किमी प्रतिघंटे हो जाएगी। हाई स्पीड इंजन परीक्षण के लिए उत्तर रेलवे के गाजियाबाद शेड में भेजा गया है। वहीं डीजल रेल कारखाना (डीरेका) में भी इस तरह के इंजन को हाईस्पीड में परिवर्तित करने के लिए कुशल तकनीकी टीम और उपकरण हैं। रेलवे बोर्ड से निर्देश मिलते ही हाईस्पीड इंजन का निर्माण शुरू हो जाएगा। हालांकि इससे पहले ही डीजल रेल इंजन कारखाना प्रशासन अपनी तैयारी शुरू करने पर गंभीरता से विचार कर रहा है। इस दिशा में तकनीकी स्तर पर भी मंथन का दौर

जारी है। 14 टन हल्का होगा हाईस्पीड इंजन विद्युत इंजन के डब्ल्यूएपी-7 श्रेणी के इंजन को हाईस्पीड बनाने के लिए इसका वजन 14 मीट्रिक टन तक कम किया



गया। इसके अलावा गियर के अनुपात में भी आमूलचूल परिवर्तन किए गए हैं। इसके साथ इस इंजन की स्पीड की निगरानी के लिए साफ्टवेयर में भी जरूरी बदलाव किए गए हैं। डीजल रेल कारखाना में भी ऐसे इंजन बनाने की क्षमता व तकनीक मौजूद है। रेलवे बोर्ड के निर्देश पर इनका उत्पादन शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए डीरेका अपनी तरफ से पूरी तरह तैयार है। हमें उच्चाधिकारियों के निर्देश की प्रतीक्षा है।